ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 1 | January 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i1.33

भारतीय युवाओं में नैतिक मूल्यों का संकट: मूल्य आधारित अभ्यास शिक्षा

राजेंद्र कुमार राजपूत

शोध छात्र, जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद फिरोजाबाद

Email: rajendrarajpoot1005@gmail.com

सारांश :

आज के सन्दर्भ में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। इन दिनों हम सब हैं घोर उपभोक्तावाद और आत्म संतुष्टि के लिए आक्रामकता से घिरा हुआ। इसके अलावा दुनिया भर में सामाजिक व्यवस्था बड़े बदलाव के दौर से गुजर रही है। उदाहरण के लिए, भारतीय परिदृश्य में, हम धीरे-धीरे संयुक्त परिवार प्रणाली से एकल परिवार प्रणाली की ओर बढ़ रहे हैं। साथ ही कहते हैं, आजकल की तेज रफ्तार जीवनशैली के कारण विशेषकर युवा पीढ़ी में तनाव का स्तर काफी अधिक है। धार्मिक कट्टरता, परमाणु हथियारों का भंडार और आतंकवादी गतिविधियाँ जैसे कारक वैश्विक शांति के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं। हमारे युवाओं का पश्चिमी जीवन शैली एवं संस्कृति की ओर झुकाव स्वाभाविक है। यह झुकाव ही नहीं है युवाओं तक ही सीमित, लगभग हर कोई जमा करने की गलाकाट प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में भाग ले रहा है अधिक पैसा और आराम और मौज-मस्ती की चीज़ें।

हाल के वर्षों में युवाओं, विशेषकर किशोरों द्वारा किए गए अपराधों के प्रतिशत में वृद्धि ने एक बड़ी चिंता पैदा कर दी है और शायद समस्या हमारे बच्चों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता में है। आज के माता-पिता बच्चे के सर्वांगीण विकास को नजरअंदाज कर बच्चे की शैक्षिक उपलब्धियों पर आधारित भौतिकवादी शिक्षा पर अधिक जोर दे रहे हैं। आज के दौर में शिक्षा की दिशा भटकाने के लिए सिर्फ माता-पिता ही नहीं बल्कि शिक्षक और स्कूल भी जिम्मेदार हैं। दरअसल हमारे स्कूलों और कॉलेजों का पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या भी बच्चे को अधिक मूल्य सिखाने के लिए अनुकूल नहीं है। लेकिन अब माता-पिता और शिक्षक दोनों ने व्यक्ति के जीवन में मूल्य शिक्षा के महत्व को पहचान लिया है। आसानी से बचपन में स्कूल जाने से पहले माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वे बच्चे में आवश्यक मानवीय मूल्यों को शामिल करें और हमेशा स्पष्टीकरण, प्राथमिक जिम्मेदारी, व्यवहार, ग्रहों का सहयोग, न्याय के साथ काम करना, समानता, संतुलन, पारस्परिकता और साझा करना, और मानवतावादी आध्यात्मिक संस्कृति जैसे "ओउम" तीर्थयात्रियों, दिव्य जंगलों के ध्यान अभ्यास के रूप में।

मूल शब्द: व्यक्तित्व, गतिविधियाँ, जागरूकता, शैक्षणिक उपलब्धियाँ, मानवतावादी, मूल्य शिक्षा।

परिचय:

मूल्य जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में योगदान करते हैं। वे जीवन को एक दिशा देते हैं और इस प्रकार आनंद, संतुष्टि और शांति लाते हैं। वास्तव में वर्तमान युग में शिक्षा में अत्याधुनिक तकनीक शामिल है, जहां हम आज के जीवन में सीखने को लागू करने और समाज, राष्ट्र और स्वयं के विकास के लिए ज्ञान का सही अर्थों में उपयोग करने के बजाय ज्ञान और परीक्षाओं में रैंक की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। अभिभावक उन स्कूलों का चयन कर रहे हैं जो उनके विद्यार्थियों की उपलब्धि हैं ।

शिक्षा के अन्य पहलुओं की उपेक्षा करना । वर्तमान युग के माता-पिता और शिक्षक चाहते हैं कि छात्र उस प्रकार की शिक्षा सीखें जो उसे बेहतर नौकरी और रोजगार बाजार में स्थिति प्राप्त करने में मदद कर सके जो अंततः उसे बहुत सारा पैसा और अवकाश की चीजें जमा करने में मदद करेगी। आनंद ट्रशली का कहना है कि शिक्षा के उद्देश्य को हमारे नीति निर्माताओं ने पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया है और छात्र अंक प्राप्त करने वाली मशीन बन गए हैं और शिक्षक मशीन ऑपरेटर बन गए हैं। वस्तुतः शिक्षा का मूल एवं प्रारम्भिक उद्देश्य अन्तःकरण को प्रकाशित करना है जीवन को बेहतर तरीके से समझने में सक्षम व्यक्ति आधुनिकीकरण की दौड़ में पिछड़ गया है। सचमुच कहते हैं कि मूल्यपरक शिक्षा समाज की रीढ़ है। दूसरे शब्दों में, आने वाले समय में उत्तरदायी समाज में मूल्य-उन्मुखता का होना आवश्यक है। मूल्य एक समाज से दूसरे समाज में और समय-समय पर भिन्न हो सकते हैं लेकिन प्रत्येक समाज कुछ नैतिक मूल्यों का पालन करता है और इन मूल्यों को सभी समाजों द्वारा "वैश्विक मूल्यों" के रूप में स्वीकार किया जाता है |

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता एवं उद्देश्य:

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति को मानव कल्याण की ओर उन्मुख करने के लिए नैतिक जागरूकता का समर्थन किया जाना चाहिए।
- मूल्य शिक्षा स्वयं के बारे में उचित रुचि, दृष्टिकोण, मूल्यों और क्षमता का जिज्ञासा विकास जागृत करती है।
- पारंपरिक मूल्यों की सामान्य गिरावट के साथ इकाई मानव को फिर से खोजा जाना चाहिए।
- छात्रों को मूल्यों से जुड़े मुद्दों के बारे में निर्णय लेने में अधिक जटिल स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें मूल्य शिक्षा के माध्यम से ऐसी स्थितियों में उचित विकल्प चुनने की क्षमता विकसित करने में मदद की जानी चाहिए।
- किशोर अपराध में वृद्धि उन युवाओं के लिए एक संकट है जो व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया से गुजरते हैं।
- मूल्य शिक्षा सामाजिक और प्राकृतिक एकीकरण को बढ़ावा देने में मदद करती है।

अध्ययन के उद्देश्य:

- शिक्षकों की भूमिका एवं स्थिति का अध्ययन करना

- समाज में. द्वितीय. ऐसे व्यक्ति का विकास करना जिसके पास मानवतावादी और वैज्ञानिक ज्ञान की व्यापक पृष्ठभूमि होगी। सामग्री से संबंधित मूल्यों को इंडेंट करने के लिए संदिग्ध में शामिल गतिविधियों की प्रक्रिया करें।
- छात्रों को अपने स्वयं के मूल्यों के बारे में सोचने और उन्हें स्पष्ट करने और दूसरों के साथ उनकी तुलना करने का अवसर प्रदान करना।
- छात्रों में नैतिकता, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करना।
- हमारे जीवन में सामाजिक, नैतिक सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय मूल्यों की भूमिका को समझाना।
- हमारे राष्ट्रीय इतिहास और विरासत, राष्ट्रीय एकता, सामुदायिक विकास और समाज के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- नैतिक मूल्यों और उनके बारे में जागरूकता पैदा करना और विकसित करना
- महत्व और भूमिका. नौ. विभिन्न जीवित और निर्जीव जीवों और पर्यावरण के साथ उनकी अंतःक्रिया के बारे में जानना।
- आत्म-प्राप्ति और दूसरों के सामान्य कल्याण के लिए उत्कृष्ट सेवाओं के लिए व्यक्तिगत कौशल और प्रतिभा विकसित करना।
- उच्च शिक्षा में शिक्षकों के खराब प्रदर्शन के लिए जिम्मेदार कारणों का पता लगाना।
- जिम्मेदार समाज, मूल्य शिक्षा की अवधारणा, मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान क्षेत्रों का अध्ययन करना।

क्रियाविधि:

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) अकादमिक स्टाफ कॉलेज में ओरिएंटेशन कार्यक्रम और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम से गुजरने वाले प्रतिभागियों के मूल्य पैटर्न के बारे में जानकारी जानबूझकर 85 प्रतिभागियों से एकत्र की गई है। प्राथमिक डेटा साक्षात्कार अनुसूची/प्रश्नावली और अवलोकन विधि के माध्यम से एकत्र किया गया है। डेटा का विश्लेषण सरल सांख्यिकीय तरीकों को अपनाकर किया गया है यानी डेटा की प्रतिशत और औसत व्याख्या अध्ययन के उद्देश्यों की उपलब्धियों पर कठोर विश्लेषण पर आधारित है।

मूल्य आधारित शिक्षा की अवधारणा:

साहित्य में मूल्यों को शाश्वत विचारों से लेकर व्यवहारिक क्रियाओं तक सब कुछ के रूप में परिभाषित किया गया है। जैसा कि यहां उपयोग किया गया है, मूल्य अच्छाई, मूल्य या सुंदरता के स्तर को निर्धारित करने के मानदंडों को संदर्भित करते हैं। शब्दकोश अर्थ (वांछनीय मूल्य) मौखिक वर्णनात्मक (मूल्य आत्म विकास, आत्म-प्राप्ति आदि की ओर ले जाता है) और परिचालन परिभाषा (मूल्य मनुष्य द्वारा किसी क्रिया को दिया गया अर्थ है) के माध्यम से कोई भी मूल्य शब्द को परिभाषित कर सकता है। सरल शब्दों में मूल्य आधारित शिक्षा का अर्थ उस शिक्षा से है जो बच्चों को उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक कुछ आवश्यक नैतिकता, नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आध्यात्मिकता, मूल्य प्रदान करती है और उन्हें एक पूर्ण मनुष्य के रूप में तैयार करती है। यह चरित्र का निर्माण करता है और व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है।

मूल्य आधारित शिक्षा में शारीरिक, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, शिष्टाचार और सामाजिक व्यवहार, नागरिक, अधिकार और कर्तव्य आदि शामिल हैं। हम में से हर कोई व्यक्ति के जीवन में इन मूल्यों के महत्व के बारे में अच्छी तरह से जानता है। फिर भी हम एक व्यक्ति के जीवन में इन मूल्यों को अपनाते हैं, फिर भी हम एक व्यक्ति के जीवन में इन मूल्यों को विकसित नहीं कर पाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई व्यवहार संबंधी और विकास संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं। अगला सवाल जो हमारे मन में आता है वह यह है कि ये कैसे बच्चों में मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

कुछ मनोवैज्ञानिक और शिक्षाशास्त्रियों का सुझाव है कि स्कूल के समय और समाज के संपर्क में आने के बाद व्यक्ति में नैतिक मूल्यों की शिक्षा स्वतः ही विकसित हो जाती है। बच्चा समूह की आवश्यकता और उस समूह द्वारा विकसित और स्वीकृत मानकों और कमरों के अनुसार समायोजन करने का प्रयास करता है, जिससे वे संबंधित हैं। निरंतर प्रक्रिया के दौरान वह खुद को बदलता रहता है लेकिन यह अवधारणा विफल हो जाती है

स्पष्ट करें कि समान स्थिति में दो व्यक्तियों द्वारा किया गया समायोजन भिन्न-भिन्न क्यों होता है। समायोजन सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी, यदि परिवर्तन सकारात्मक हैं तो इन्हें मूल्य कहा जा सकता है और यदि परिवर्तन नकारात्मक या अवसर आधारित हैं तो उन्हें केवल समायोजन कहा जा सकता है। तो हम कह सकते हैं कि सामाजिक समायोजन के रूप में स्कूली बच्चे के दौरान प्राप्त अनुभव के रूप में दो व्यक्ति कभी भी एक ही स्थिति पर समान प्रतिक्रिया नहीं करते हैं, इसका मतलब है कि मूल्य वे विचार हैं जिन्हें बच्चे में बाहर से पेश किया जाना है।

बच्चों में आवश्यक मूल्यों का विकास करना:

ऐसे कई आवश्यक मूल्य हो सकते हैं जिन्हें अलग-अलग उम्र में किसी व्यक्ति में विकसित किया जाना चाहिए। यह पारिवारिक मूल्य, नैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य, पर्यावरणीय मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य, अंतर्राष्ट्रीय मूल्य, भौतिक मूल्य, अर्थशास्त्र मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य और समानता मूल्य हो सकते हैं। एक बच्चा अपने जीवन में किस प्रकार के मूल्य सीख सकता है और उनका अनुसरण कर सकता है, यह उसके आयु समूह पर निर्भर करता है। बचपन में बच्चा ईमानदारी, सच्चाई, बड़ों का आदर करना, समय की पाबंदी, सादगी, जिम्मेदारी और प्यार जैसे सरल मूल्य सीख सकता है, लेकिन जीवन के बाद के चरणों में उन्हें अन्य जटिल मूल्य सिखाए जा सकते हैं और वे पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से या व्याख्यान के माध्यम से शिक्षण का पालन करते हैं, इसे प्रदर्शित करना और सेमिनार करना बेहतर होता है। .

बच्चे में मूल्यों के विकास में माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका:

माता-पिता और शिक्षक दो केंद्रीय बिंदु हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर अधिकतम प्रभाव डालते हैं लेकिन दुर्भाग्य से माता-पिता और शिक्षक स्वयं जीवन में मूल्यों के महत्व को भूल गए हैं। सामान्यतः बच्चा उन व्यक्तियों के व्यवहार का अनुकरण

करता है जिनके साथ वह संपर्क में रहता है। यदि माता-पिता और शिक्षक स्वयं मूल्यों और जीवन को दिशा देने में इसकी भूमिका का प्रदर्शन करें तो बच्चा स्वतः ही आवश्यक मूल्यों को प्राप्त कर लेगा।

कुछ माता-पिता अत्यधिक देखभाल करने वाले और स्वामित्व वाले होते हैं जबकि अन्य अपने व्यस्त कार्यक्रम या अशिक्षा के कारण अपने बच्चे के बारे में अधिक चिंतित नहीं होते हैं। दूसरी ओर इसी प्रकार कुछ माता-पिता भी सख्त व्यवहार चाहते हैं

अपने बच्चे को अनुशासित वातावरण में बड़ा करना चाहते हैं जबकि अन्य बहुत अनिच्छुक हैं। माता-पिता के ये दृष्टिकोण बच्चे में मूल्यों के विकास में सहायक नहीं होते हैं। आदर्श पेटेंट में उन सभी का मिश्रण होगा जो स्थिति के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं। अति कभी वांछनीय नहीं होती. एक शराबी या धूम्रपान करने वाला कभी नहीं चाहता कि उसका बच्चा शराब या धूम्रपान का सेवन करे, लेकिन वह इसे व्यक्त भी नहीं करना चाहता। वर्तमान स्थिति या परिस्थिति में माता-पिता के लिए यह बेहतर है कि वे अपने बच्चे के लिए आदर्श बनें, इससे पहले कि वे अपने परिवेश में उपयुक्त रोल मॉडल अपनाएं।

दूसरी ओर शिक्षण एक नौकरी नहीं बल्कि एक दृष्टिकोण है। शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी को अपना बच्चा समझना चाहिए। यदि आप 5 वर्ष से 12 वर्ष की आयु के किसी विद्यार्थी से पूछें कि आप क्या बनना चाहते हैं? 100 में से 90 बार वह उत्तर देगा कि वह शिक्षक बनना चाहता है। यह दर्शाता है कि एक शिक्षक छात्रों के लिए क्या मायने रखता है। वह बचपन से ही उनके लिए आदर्श हैं। हमेशा किसी भी विषय से संबंधित प्रत्येक शिक्षक को अपने शिक्षण के माध्यम से छात्रों में आवश्यक मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए, तभी उनका शिक्षण सार्थक होगा।

मूल्य आधारित शिक्षा की पद्धति एवं दृष्टिकोण:

मूल्य शिक्षा प्रणाली समाज का पिछलग्गू है। मूल्य एक समाज से दूसरे समाज में और समय-समय पर भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। लेकिन प्रत्येक समाज कुछ नैतिक मूल्यों का पालन करता है और उन मूल्यों को सभी समाजों द्वारा "वैश्विक मूल्यों" के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

भारत में रामायण या महाभारत काल के दौरान गुरुकुलों में बच्चों को औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ मूल्यों की शिक्षा दी जाती है, जहाँ उनके आश्रम विभिन्न तरीकों से उन्हें जीवन का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। आधुनिक दिनों में गुरुकुलों का स्थान ले लिया गया है, लेकिन औपचारिक स्कूल और गाँव जो बच्चों को औपचारिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, न केवल स्कूल और कॉलेज, परिवार, समाज, जनसंचार माध्यम और संचार के अन्य साधन भी बच्चों की शिक्षा को प्रभावित कर रहे हैं। माता-पिता और शिक्षक बच्चे में आवश्यक मूल्यों को शामिल करने के लिए इन उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। मूल्य शिक्षा प्रदान करने की विधि और रणनीति बच्चे की चुनी गई उम्र और कुछ अन्य कारकों पर निर्भर करती है। मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम का उपयोग किया जा सकता है। द्वारा विभिन्न गतिविधियों से बच्चा आसानी से मनोवृत्ति को पकड़ सकता है।

कक्षा कक्ष में शिक्षक छात्रों को मूल्यों के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए जीवनी, बहस, चर्चा, कहानियाँ, निबंध, लेख लेखन, समाचार पत्र पढ़ना और छोटी कक्षा की घटनाओं का उपयोग कर सकते हैं। छात्रों को मूल जीवन की घटनाओं के समान

व्यावहारिक स्थितियों में संलग्न किया जा सकता है जो आवश्यक और अनुभवों के विकास में सहायक होंगे जो उन्होंने पहले से ही कुछ सामाजिक गतिविधियों को सीख लिया है जैसे कि स्कूल परिसर या कक्षा में सामाजिक वानिकी को बनाए रखना या पर्यावरण जागरूकता प्राप्त करना या स्वास्थ्य और स्वच्छता साक्षरता कार्यक्रम प्राप्त करना। समुदाय बदलाव ला सकता है, छात्रों को नाटक, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक उत्सव जैसे कार्यक्रमों को संगठित करने और उनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो संदेश आधारित हैं जो बच्चों में मूल्यों के विकास में सहायक हो सकते हैं।

सुझाव:

कुछ सुझाव जो बच्चों और छात्रों के जीवन में आवश्यक मूल्यों के विकास में सहायक हो सकते हैं, उन्हें गंभीर प्रयासों और अत्यंत सावधानी से लागू किया गया माता-पिता को अपना समय पैसा कमाने में लगाने की बजाय बच्चे के साथ अधिक समय बिताने का प्रयास करना चाहिए। यदि माता-पिता अपने बच्चे को आवश्यक संदेश देने वाली एक कहानी हर दिन पढ़ाने का निर्णय लेते हैं तो आधा काम पूरा हो जाता है।

- शिक्षकों को औपचारिक शिक्षा के साथ पहले दिन ही बच्चे को मूल्यपरक शिक्षा देने का अपना कर्तव्य समझना चाहिए।
- सकारात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कक्षा स्तर के अभ्यास सिखाता है।
- वांछनीय दृष्टिकोण और व्यवहार को मॉडल करना, जैसे धैर्यपूर्वक सुनना, लचीलापन, दयालु होना और देखभाल करना, गलतियों को स्वीकार करना, बच्चे की गरिमा का सम्मान करना, छात्रों पर इसके प्रभावों के बारे में लगातार जागरूक रहना।
- अवसर के समय छात्रों को मूल्यों की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना।
- अनुभवात्मक जानकारी प्रदान करने के लिए मंच और विषय के अनुरूप शैक्षणिक रणनीतियों जैसे चर्चा, रोल प्ले, नाटक, कविताएं, गीत, बहस, सेमिनार, कहानी सुनाना आदि का उपयोग करना।
- चिंतन के बाद सीखना।
- छात्रों में मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर स्कूल में विभिन्न प्रकार की पाठ्येतर गतिविधियाँ और ऐसे अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
- पाठ्यचर्या में सुधार की तत्काल आवश्यकता है, विशेष रूप से सीखने के पाठ्यक्रम का उपयोग विषय वस्तु की शिक्षा के साथ-साथ मूल्य को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।
- परामर्श दृष्टिकोण को अपनाना और बच्चों के लिए एक सुविधाप्रदाता बनना, जिससे उन्हें शिक्षा, व्यक्तिगत समाज जीवन से संबंधित उनकी दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाया जा सके।
- स्वस्थ कक्षा प्रथाओं को लागू करने के अनुभव को अन्य शिक्षकों के साथ साझा करना।
- अपने बच्चों के समग्र विकास और प्रगति के बारे में माता-पिता के साथ लगातार कड़ी मेहनत करना।

निष्कर्ष:

मूल्य शिक्षा स्कूली बच्चों को हिंसा के रास्ते से बचाने का एक उपचारात्मक उपाय है, यह बच्चों के मन में सामाजिक, नैतिक मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास करती है। उपरोक्त चर्चा के रूप में हम आ सकते हैं

निष्कर्ष यह है कि हमारे बच्चों को बचपन से ही विशेष रूप से किशोरावस्था के दौरान मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने से हमें युवाओं में गिरते नैतिक मूल्यों की समस्या पर काबू पाने में मदद मिल सकती है। माता-पिता और शिक्षकों को इस बात पर पुनर्विचार करना होगा कि वे अपनी भावी पीढ़ी को किस प्रकार की शिक्षा सिखाना चाहते हैं। माता-पिता, शिक्षक, समाज और मीडिया के सहयोगात्मक प्रयास भारतीय युवाओं को अनुशासित जीवन जीने के लिए सही रास्ते पर ला सकते हैं। अंत में मैं स्पष्ट कर दूं कि मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने में स्कूल शिक्षक और माता-पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए समग्र रूप से मूल्य शिक्षा भारत के युवाओं को अधिक प्रेरित करने पर आधारित है।

संदर्भ–

[1]. थॉमस एस पॉपकेविट्ज़, बी.रॉबर्ट टैबाचनिक (1980), सामाजिक शिक्षा में सिद्धांत और अनुसंधान, 7(4):81-83. http://dx.doi.org/10.1080/00933104.1980.10506070

[2]. https://online-jcu-edu-au.translate.goog/blog/positive-psychology-examples-techniques?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

[3]. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Positive_psychology?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

[4]. थॉमस ई. केली (2012), विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा: शिक्षक की भूमिका पर चार परिप्रेक्ष्य, Page: 113-138. https://doi.org/10.1080/00933104.1986.10505516

[5]. सीताराम ए.आर. की अवधारणा और उद्देश्य मूल्य शिक्षा, WWW.ncte.Inda.org (14 अगस्त 2014 को पुनःप्राप्त)

[6]. करजागी.जी (2014) शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका मूल्य प्रदान करने में खंड 1/4 पृष्ठ 13-15 www.iosjournals.com

[7]. डायने टिलमैन (2001) के लिए जीवन मूल्यों की गतिविधियाँ छोटे बच्चे। न्यूयॉर्क एचसीआई पुस्तकें।

Cite this Article

राजेंद्र कुमार राजपूत, "भारतीय युवाओं में नैतिक मूल्यों का संकट: मूल्य आधारित अभ्यास शिक्षा", International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 1, pp. 17-23, January 2024.

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i1.33*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.